जैन जीवन शैली जन जीवन शैली बने : आचार्य महाश्रमण

रतनगढ़ : 14 जनवरी 2011

राष्ट्रसंत आचार्य महाश्रमण ने जैन जीवन शैली पर बोलते हुए कहा कि जैन जीवन शैली और आदर्श जन जीवन शैली में कोई विशेष अंतर नहीं है। उन्होंने जैन जीवन शैली के नौ सूत्र बताये। सम्यक दर्शन की साधना, अनेकांत की साधना, अहिंसा की साधना, श्रमण संस्कृति की साधना, इच्छा परिमाण की साधना, सम्यक आजीविका, सम्यक संस्कार, सम्यक आहार व सधार्मिक वात्सल्य। ये सूत्र व्यक्ति के जीवन में जुड़ जाए तो जीवन अच्छा हो जाता है। उन्होंने साधु–साध्वियों के जीवन पर बोलते हुए कहा कि संतों की जीवन शैली में समय का उचित विभाजन होना चाहिए। उनकी दिनचर्या में श्रावकों का मार्गदर्शन, आगमों का विवेचन, आत्म शुद्धि के लिए तप व स्वयं के व्यवहार का उचित समावेश होना चाहिए।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि अपनी आस्था अपने इष्ट में होनी चाहिए पर व्यक्ति को किसी भी देवी–देवता की आशातना नहीं करनी चाहिए। जो संयमपूर्ण आहार लेता है, संयमपूर्ण वाणी बोलता है, संयमपूर्ण निद्रा लेता है ऐसे साधक का देवता भी सम्मान करते है। उन्होंने कहा कि अहिंसा ही समता है इसे आत्मसात् करलें तो कोई भी साधना सिद्ध हो सकती है।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि जो जन्मा है उसकी मृत्यु निश्चित है। मृत्यु का नियम सब पर लागू है, आदमी को चाहिए कि जब तक जीएं तब तक धार्मिक व श्रेष्ठ जीवन जीएं। शांति से मरण का वरण विरल है। व्यक्ति में शक्ति हो तो उस शक्ति का उपयोग जन कल्याण के लिए होना चाहिए। उन्होंने कहा कि जहां दर्शन सम्यक होता है वहां आचरण स्वतः ही सम्यक हो जाता है। मनुष्य के व्यापक दृष्टिकोण से ही वह अपने जीवन की और जगत की समस्याओं को सुलझा सकता है।

आदर्श साहित्य संघ से जुड़े कमलेश चतुर्वेदी के परलोकगमन पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि उन्होंने गणाधिपति तुलसी के समय से ही धर्मसंघ की सेवा में अपना जीवन अर्पित कर दिया।

उन्होंने शासनगौरव साध्वी राजीमती जी के विनम्र निवेदन का उल्लेख करते हुए रतनगढ़ प्रवास अवधि को एक दिन और बढ़ाने की बख्शीश दी तो पूरा पाण्डाल ऊ अर्हम् की हर्ष ध्वनि से गूंज उठा। अब पूज्यप्रवर 23 जनवरी 2011 को रतनगढ़ से विहार करेंगें। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रवक्ता अभिनेश महर्षि ने आचार्यश्री के चरणों में वंदन कर नगर की ओर से अभिनन्दन किया। समिति के अध्यक्ष कल्याण मित्र श्री बुद्धमल दूगड़ ने दुपI ओढ़ाकर अभिनेश महर्षि का स्वागत किया। इससे पूर्व नन्ही बालिका चन्दना बोथरा ने मंगल गीत से पूज्यप्रवर का अभिवादन किया। साध्वी सोमलता व मुनि विजय कुमार ने गुरुचरणों में गीतिकाओं के माध्यम से अपनी भावनायें व्यक्त की।

रणजीत दूगड़
संयोजक मीडिया समिति
+91 9831017467
rs_dugar@yahoo.com

14.01.2011
जैन जीवन शैली
आचार्य श्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति, रतनगढ़